पुस्तक समीक्षा

यथार्थ पाण्डे[1]

[1]B.A. (Hons.) Political Science, University of Delhi

इब्नबतूती, संपादित: दिव्य प्रकाश दुबे, हिंदी युग्म, जुलाई *2020*

‘‘इब्नेबतूती - एक अकेलेपन की तड़प, एक उम्मीद की किरण’’

दिव्य प्रकाश दुबे की 'इब्नेबतूती' एक ऐसी किताब है जो हँसाती भी है और रुलाती भी। यह सिर्फ एक किताब नहीं है, बल्कि एक भावनात्मक सफर है—एक ऐसा सफर जो हमें अकेलेपन के गहरे सागर में ले जाता है।
कहानी का केंद्रबिंदु है राघव अवस्थी, एक युवा जो अपनी सिंगल मदर के लिए एक 'टिकाऊ' जीवनसाथी की तलाश में निकल पड़ता है। यह सफर उसे भारत के विभिन्न शहरों में ले जाता है, जहाँ वह अजीबोगरीब लोगों से मिलता है और उनकी अनोखी कहानियाँ सुनता है। हर किरदार, हर शहर, हर घटना इस यात्रा में एक अलग रंग भरती है।
दुबे जी की लेखनी में अद्भुत शक्ति है। वे अपने शब्दों के जादू से एक ऐसी दुनिया रच देते हैं, जो हमारी ही लगती है, पर फिर भी कुछ अलग सी होती है। उनके किरदार इतने सजीव और सच्चे लगते हैं कि ऐसा महसूस होता है जैसे वे हमारे ही आस-पड़ोस में रहते हों।

दुबे जी की लेखनी में अद्भुत शक्ति है। वे अपने शब्दों के जादू से एक ऐसी दुनिया रच देते हैं, जो हमारी ही लगती है, पर फिर भी कुछ अलग सी होती है। उनके किरदार इतने सजीव और सच्चे लगते हैं कि ऐसा महसूस होता है जैसे वे हमारे ही आस-पड़ोस में रहते हों।
राघव का यह सफर केवल भौगोलिक नहीं है, बल्कि यह एक आंतरिक सफर भी है। वह अपने भीतर के खालीपन को भरने की तलाश में है—एक ऐसे जुड़ाव की तलाश, जो उसे पूरा कर सके। लेकिन हर कदम पर उसे निराशा ही हाथ लगती है।
दुबे जी ने इस किताब में अकेलेपन के विभिन्न रंगों को बखूबी उकेरा है। वह अकेलापन जो शहरों की भीड़ में छिपा होता है, वह अकेलापन जो परिवार के बीच भी महसूस होता है, और वह अकेलापन जो सफलता की ऊँचाई पर भी सताता है।

इस किताब को खास बनाने वाली बात है दुबे जी का हास्य-व्यंग्य का प्रयोग। वे गंभीर विषयों को हल्के-फुल्के अंदाज़ में प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठक को हँसी भी आती है और सोचने पर मजबूर भी होना पड़ता है। जैसे, जब राघव अपनी माँ के लिए लड़कों के प्रोफाइल देख रहा होता है, तो लेखक का व्यंग्य सहज ही पाठक का ध्यान खींच लेता है।

लेकिन इस हास्य के पीछे एक गहरा दर्द छिपा है। यह दर्द आज की पीढ़ी के युवाओं का है। एक ऐसा दर्द जो कहता है कि हम सब कहीं न कहीं अकेले हैं, चाहे हमारे आसपास कितने ही लोग क्यों न हों।

कहानी के अंत तक राघव की यात्रा खत्म नहीं होती। वह अभी भी तलाश में है, अभी भी उम्मीद कर रहा है। यही उम्मीद है जो हमें जीने की ताकत देती है, जो अंधकार में भी एक किरण दिखाती है।
'इब्नेबतूती' एक ऐसी किताब है जो हमें हँसाती है, रुलाती है, सोचने पर मजबूर करती है, और अंततः हमें उम्मीद से भर देती है। यह किताब हमें यह याद दिलाती है कि हम अकेले नहीं हैं और हमारी तलाश अभी खत्म नहीं हुई है।

इस पुस्तक का पारंपरिक हिंदी साहित्य से हटकर विकास, अपनी जड़ों से जुड़ा रहना, किताब के शीर्षक में साफ दिखाई देता है। इब्नेबतूती शीर्षक प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्ति इब्न बत्तूता की ओर इशारा करता है, जो मोरक्को के यात्री थे और जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों का यात्रा करते हुए अपने अनुभवों को दर्ज किया था। इसी तरह, कहानी का नायक राघव भी एक यात्रा पर निकलता है—शारीरिक और भावनात्मक दोनों—वह अपनी माँ के लिए एक उपयुक्त जीवनसाथी की तलाश में विभिन्न भारतीय शहरों की यात्रा करता है। शीर्षक की यह दिलचस्प समानता उसके ऐतिहासिक यात्रा के साथ राघव की खोज को जोड़ती है, जो साहसिकता और खोज के विषय को उजागर करता है। शीर्षक का हल्का-फुल्का रूप किताब की गहरी और मजेदार कहानी कहने की शैली से मेल खाता है। यह आधुनिक कथा शैली को दर्शाता है, जिसमें गंभीर विषयों जैसे अकेलापन को हास्य और व्यंग्य के साथ जोड़ा गया है।

यह किताब हिंदी साहित्य के लगातार बदलते विकास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। दुबे का काम उस बड़े प्रवृत्ति का हिस्सा है, जहाँ हिंदी साहित्य में विषयों, कथा शैलियों और रूपों के साथ प्रयोग बढ़ रहा है, ताकि यह वैश्विक पाठक वर्ग को आकर्षित कर सके।

लेखक दिव्य प्रकाश दुबे और सत्य व्यास "नई वाली हिंदी" के विकास में अग्रणी माने जाते हैं। यह भाषाई परिवर्तन दर्शाता है कि भाषा कैसे सांस्कृतिक, तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों के अनुसार ढलती है। इसके अलावा, साहित्य में यह विकास अधिक समावेशी संवाद का निर्माण करता है, सामाजिक मुद्दों पर चर्चा को लोकतांत्रिक बनाता है और उसे व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाता है। इसके परिणामस्वरूप, समकालीन सामाजिक परिवर्तनों को एक बड़े जनसमूह द्वारा समझा और अपनाया जा सकता है।

पुस्तक इब्नेबतूती इस प्रवृत्ति का उदाहरण है, जो बदलते सामाजिक मानदंडों पर टिप्पणी करती है। राघव की अपनी सिंगल माँ के लिए जीवन साथी खोजने की यात्रा के माध्यम से, यह कहानी एकल अभिभावकत्व, बदलते पारिवारिक संबंधों और पारंपरिक सामाजिक भूमिकाओं के पुनर्परिभाषा जैसे विषयों को गहराई से छूती है। ये प्रगतिशील विषय हिंदी साहित्य में एक नए दृष्टिकोण का संकेत देते हैं, जो पारंपरिक कथाओं से आगे बढ़कर प्रासंगिक और अनदेखे विषयों का अन्वेषण करता है।

दिव्य प्रकाश दुबे की रचनाएँ, जैसे इब्नेबतूती, अक्टूबर जंक्शन और मुसाफिर कैफे, आज के युवाओं की आधुनिक जीवनशैली को बखूबी चित्रित करती हैं। उनकी संवादात्मक शैली, जिसमें पारंपरिक विषयों को आधुनिक बोलचाल के भावों के साथ जोड़ा गया है, समकालीन पाठकों के साथ गहरी प्रतिध्वनि बनाती है। यह दृष्टिकोण शास्त्रीय और आधुनिक हिंदी साहित्य के बीच की खाई को पाटता है और इसे उन युवा पाठकों के लिए भी सुलभ बनाता है जो पारंपरिक हिंदी साहित्य को कम पढ़ते हैं।

दिव्य प्रकाश दुबे हिंदी लेखन के उन उभरते हस्ताक्षरों में से हैं जो अपनी हर नई पुस्तक से साथ और भी बेहतर होते चले गए *I* उनका काम शहरी वास्तविकताओं को उजागर करने के लिए जाना जाता है, जो भाषा के विकास को संजोते हुए विविध विषयों और पात्रों को जीवन्त बनाता है। इब्नेबतूती एक ऐसी ही पुस्तक है। इसमें अकेलेपन की खोज और तेज़ रफ्तार, अक्सर व्यक्तिवादी शहरी माहौल में अर्थपूर्ण रिश्तों की तलाश की विवेचना की गई है, जो हिंदी लेखकों के शहरी अनुभवों और आधुनिक शहर जीवन की जटिलताओं पर बढ़ते ध्यान के साथ मेल खाता है।

देश की उन्नति में भाषा और साहित्य का अहम योगदान होता है। इब्नेबतूती पुराने साहित्यिक कामों में इस्तेमाल होने वाली औपचारिक, शास्त्रीय हिंदी के विपरीत है। इब्नेबतूती ने बोलचाल की भाषा को अपनाकर साहित्यिक परंपरा को रोज़मर्रा की ज़िंदगी से नजदीक किया है, जिससे यह भारत के बदलते भाषाई परिदृश्य से जुड़ने में सक्षम होती है। युवाओं के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हुए, इब्नेबतूती आधुनिक साहित्य का प्रतीक बन जाती है, जो युवाओं में आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने, सांस्कृतिक पहचान के प्रति सम्मान को प्रोत्साहित करने और सामाजिक एकता को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है।